

आदिकालीन साहित्य : नामकरण और काल निर्धारण

- सेमेस्टर 1 - MJC हिन्दी
- प्रस्तुतकर्ता: डॉ. पुष्पा महाराज
- महिला कॉलेज, डालमियानगर

प्रस्तावना

- हिंदी साहित्य का इतिहास भारतीय संस्कृति और समाज के विकास के समानांतर चलता है। परंपरागत रूप से हिंदी साहित्य के चार मुख्य काल माने गए हैं — 1. आदिकाल (वीरगाथा काल), 2. भक्तिकाल, 3. रीतिकाल, 4. आधुनिक काल। इनमें आदिकाल हिंदी साहित्य का प्रथम और मूलाधार युग है, जिसमें हिंदी भाषा अपनी जड़ों से उभरकर लोकभाषा के रूप में आकार ले रही थी।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

- 10वीं से 14वीं शताब्दी तक का भारत राजनीतिक दृष्टि से संक्रमण के दौर में था। इस युग में राजपूत वंशों का उत्कर्ष था, किंतु साथ ही विदेशी आक्रमणों से संघर्ष भी जारी था। राज्य सत्ता में अस्थिरता, वीरता और देशभक्ति की भावना प्रबल थी। साहित्य इस काल की वास्तविकता का प्रतिबिंब था — इतिहास और यथार्थ का मिश्रण।

आदिकाल का नामकरण — परिचय

- विभिन्न विद्वानों ने इस काल को अलग-अलग नामों से संबोधित किया है — ‘आदिकाल’, ‘वीरगाथा काल’ और ‘प्रारंभिक काल’। नामकरण का आधार दो दृष्टियों पर टिका है — भाषिक दृष्टि: हिंदी भाषा का आरंभिक स्वरूप, और साहित्यिक दृष्टि: रचनाओं की विषयवस्तु अर्थात् वीरगाथाएँ।

विभिन्न विद्वानों के मत — नामकरण पर

- 1. आचार्य रामचंद्र शुक्ल – ‘आदिकाल’; यह हिंदी का आरंभिक काल है।
- 2. डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी – ‘वीरगाथा काल’; इस काल की रचनाएँ वीरों की गाथाओं पर आधारित हैं।
- 3. डॉ. नागेंद्र – ‘आदिकाल’; भाषा के उद्भव का युग।
- 4. डॉ. नामवर सिंह – ‘प्रारंभिक काल’; साहित्यिक परंपरा का प्रारंभ।
- 5. डॉ. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र – ‘वीरगाथा काल’; वीरता और युद्ध की प्रधानता।
- 6. डॉ. किशोरीदास वाजपेयी – ‘आदिकाल’; हिंदी का भाषिक आरंभ।

नामकरण का तुलनात्मक विश्लेषण

- 'आदिकाल' नाम भाषिक विकास पर बल देता है, जबकि 'वीरगाथा काल' साहित्यिक प्रवृत्तियों पर आधारित है। 'प्रारंभिक काल' दोनों दृष्टियों को समाहित करता है। इसलिए 'आदिकाल' भाषिक दृष्टि से और 'वीरगाथा काल' साहित्यिक दृष्टि से उचित नाम है। आज 'आदिकाल' नाम अधिक प्रचलित और स्वीकृत है।

काल निर्धारण — विद्वानों के मत

- विभिन्न इतिहासकारों ने आदिकाल की समय-सीमा का निर्धारण इस प्रकार किया है:
 - आचार्य रामचंद्र शुक्ल – 1050–1375 ई.
 - डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी – 1000–1350 ई.
 - जयशंकर प्रसाद – 1100–1375 ई.
 - डॉ. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र – 1000–1375 ई.
 - डॉ. रामकुमार वर्मा – 1050–1350 ई.
- ➡ सर्वमान्य सीमा: 1000 ई. से 1375 ई. तक।

भाषा की स्थिति

- इस काल की भाषा अपभ्रंश से विकसित होती हुई हिंदी थी। ब्रज, अवधी, राजस्थानी और अपभ्रंश के शब्द मिलते हैं। व्याकरणिक नियम अभी स्थिर नहीं थे। वाक्य संरचना बोलचाल की थी और छंदों में दोहा, चौपाई, छप्पय प्रमुख थे।

साहित्यिक प्रवृत्तियाँ

- 1. वीरगाथात्मकता – युद्ध, शौर्य और पराक्रम का वर्णन।
- 2. इतिहासपरकता – ऐतिहासिक घटनाओं का काव्यात्मक रूप।
- 3. देशभक्ति और गौरवबोध – राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति।
- 4. धार्मिक प्रभाव – जैन, बौद्ध और शैव मत का प्रभाव।
- 5. लोकप्रियता – रचनाएँ जनभाषा में थीं और लोकजीवन में लोकप्रिय रहीं।

प्रमुख कवि और कृतियाँ

- • चंदबरदाई – ‘पृथ्वीराज रासो’ (वीरता की गाथा)
- • जगनिक – ‘आल्हाखंड’ (आल्हा और उदल की वीरता)
- • हरिहर – ‘हम्मीररासो’ (हम्मीरदेव की कथा)
- • सरहपाद – ‘दोहाकोष’ (बौद्ध नीति काव्य)
- • विद्यापति – ‘पदावली काव्य’ (भक्ति का प्रारंभिक स्वर)
- • पद्मगुप्त परिमल – ‘नवसाहसांकचरित’ (इतिहास और साहित्य का संगम)

वीरगाथा काव्य की विशेषताएँ

- 1. वीर रस की प्रधानता – युद्ध, शौर्य और पराक्रम।
- 2. इतिहास और कल्पना का समन्वय।
- 3. देशभक्ति की भावना और गौरवबोध।
- 4. कथात्मकता और छंदबद्धता।
- 5. लोकप्रचलन – गाथाएँ लोकगीतों में जीवित।

आदिकाल का ऐतिहासिक महत्व

- 1. हिंदी भाषा के जन्म और विकास की नींव।
- 2. वीरता, त्याग और राष्ट्रीयता की भावना का प्रसार।
- 3. लोक संस्कृति और राजपूत आदर्शों का प्रतिबिंब।
- 4. साहित्य ने इतिहास और समाज की गौरवगाथा को स्थायी बनाया।
- 5. भक्तिकाल की पृष्ठभूमि का निर्माण इसी युग में हुआ।

आदिकाल और वीरगाथा परंपरा

- आल्हा, पृथ्वीराज, पाबूजी आदि की कथाएँ आज भी लोकगीतों में जीवित हैं। इस परंपरा ने वीरता के साथ नैतिकता और आदर्शवाद को भी प्रतिष्ठित किया। वीरगाथा काव्य ने समाज में आत्मसम्मान और राष्ट्रभक्ति की चेतना जगाई।

उपसंहार

- आदिकाल हिंदी साहित्य का आरंभिक युग है, जिसने भाषा, साहित्य और संस्कृति को दिशा दी। इस काल का साहित्य केवल मनोरंजन नहीं बल्कि इतिहास, नीति, धर्म और राष्ट्रीय चेतना का वाहक था। 'आदिकाल' नाम भाषिक उद्भव और 'वीरगाथा काल' नाम साहित्यिक विषयवस्तु के कारण उपयुक्त हैं। काल सीमा: 1000–1375 ई.। निष्कर्षतः, आदिकाल वह युग है जिसमें हिंदी भाषा ने अपना अस्तित्व पाया और साहित्य ने वीरता, गौरव तथा राष्ट्रप्रेम के माध्यम से भारतीय संस्कृति की अमर नींव रखी।